परिचय

मैं हूँ — Mystic Varruna

एक यात्री।

एक खोजी।

एक जिज्ञासु आत्मा।

मैं रास्तों पर चलता हूँ…

लेकिन मेरी असली यात्रा भीतर की है।

मैं मंदिरों की टूटी दीवारों में इतिहास खोजता हूँ।

नदियों की धारा में प्राचीन ऊर्जा सुनता हूँ।

पहाड़ों की खामोशी में ऋषियों की सांसें महसूस करता हूँ।

मैं सिर्फ घूमने वाला नहीं हूँ —

मैं खोजने वाला हूँ।

खोई हुई परंपराएँ।

भूले हुए मंदिर।

पत्थरों में छिपा विज्ञान।

और मनुष्य के भीतर सोई हुई चेतना।

हाँ — मैं हिन्दू हूँ।

पर मेरे लिए “हिन्दू” कोई लेबल नहीं है।

यह मेरी श्वास है।

यह मेरी धड़कन है।

यह मेरी पहचान नहीं — मेरी प्रकृति है।

मैं अपने कृष्ण का भक्त हूँ।

मैं अपने महादेव का साधक हूँ।

मेरे लिए वे केवल देवता नहीं —

वे मेरे मित्र हैं।

मेरे मार्गदर्शक हैं।

मेरे भीतर की आवाज़ हैं।

और हाँ —

33 करोड़ देवता?

मेरे लिए वे 33 करोड़ से भी अधिक हैं।

वे हर कण में हैं।

हर ग्रह में।

हर तारे में।

हर ब्रह्मांड में।

क्योंकि जब चेतना अनंत है —

तो दिव्यता सीमित कैसे हो सकती है?

मैं मानता हूँ —

ईश्वर केवल मंदिर में नहीं।

ईश्वर उस भीख माँगते बच्चे की आँखों में भी है।

ईश्वर उस किसान के पसीने में भी है।

ईश्वर उस वैज्ञानिक की खोज में भी है।

मेरी आस्था अंधविश्वास नहीं —

अनुभव है।

मैं प्रश्न करता हूँ।

मैं खोजता हूँ।

मैं महसूस करता हूँ।

और हर यात्रा के बाद —

मैं थोड़ा और झुक जाता हूँ।

क्योंकि जितना जानता हूँ…

उतना समझता हूँ कि जानना अभी बाकी है।

मैं हूँ Mystic Varruna

एक यात्री —

जो स्थान नहीं, चेतना खोज रहा है।

एक भक्त —

जो डर से नहीं, प्रेम से झुकता है।

एक खोजी —

जो मानता है कि सनातन केवल अतीत नहीं,

वह भविष्य भी है।

और यह यात्रा अभी शुरू हुई है।

ॐ तत्सत।

जीवन क्या है? – श्रीमद्भगवद्गीता की दृष्टि से

दिव्य संवाद — श्रीमद्भगवद्गीता

थोड़ी देर के लिए सब कुछ छोड़ दीजिए।

फोन…

लोग…

चिंताएँ…

बस अपने भीतर उतरिए।

कभी ऐसा लगा है कि बाहर सब ठीक है…

पर अंदर कुछ टूट रहा है?

मुस्कुराते हैं…

पर अकेले में सीना भारी हो जाता है।

मेहनत करते हैं…

पर संतोष नहीं मिलता।

यही क्षण है जहाँ गीता शुरू होती है।

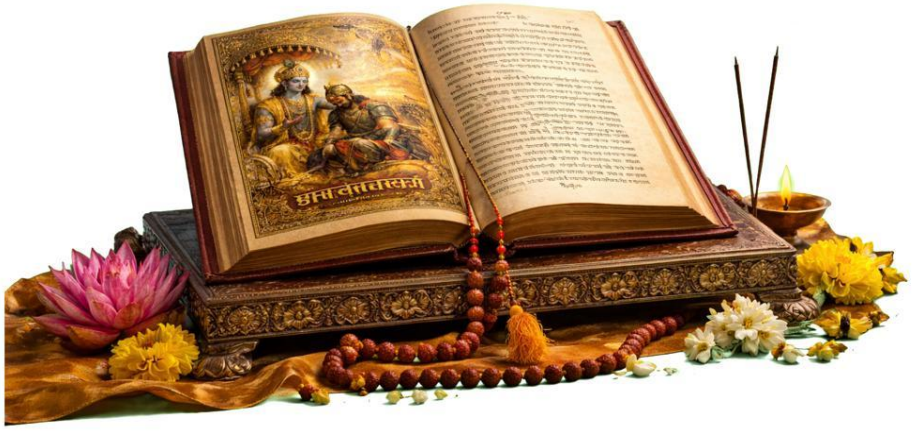

जब अर्जुन टूटे — और हम भी टूटते हैं

कुरुक्षेत्र में अर्जुन खड़े थे।

महान योद्धा। अपराजेय। वीर।

लेकिन उसी रणभूमि में उनके हाथ काँप गए।

धनुष गिर गया।

आँखों में आँसू आ गए।

उन्होंने देखा — सामने अपने ही लोग हैं।

गुरु। मित्र। रिश्तेदार।

और उन्होंने कहा:

“ऐसी जीत का क्या करूँ जो अपने ही लोगों के रक्त से मिले?”

क्या आपने भी कभी ऐसा महसूस किया है?

जब सही करना भी दर्द देता है।

जब जिम्मेदारी दिल से भारी लगती है।

जब समझ नहीं आता — भावनाएँ सुनें या कर्तव्य?

वही क्षण… जीवन का असली कुरुक्षेत्र है।

भगवान कृष्ण ने युद्ध नहीं रोका

ध्यान दीजिए…

कृष्ण ने परिस्थिति नहीं बदली।

उन्होंने युद्ध समाप्त नहीं किया।

उन्होंने अर्जुन की दृष्टि बदल दी।

और यही गीता का जादू है।

जीवन तब नहीं बदलता जब समस्याएँ चली जाती हैं।

जीवन तब बदलता है जब देखने का तरीका बदल जाता है।

“तुम यह शरीर नहीं हो”

कृष्ण ने कहा:

“आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है।”

आप यह शरीर नहीं हैं।

आप यह असफलता नहीं हैं।

आप वह अपमान नहीं हैं जो किसी ने दिया।

आप वह दर्द नहीं हैं जो आपने सहा।

बचपन गया।

युवावस्था जाएगी।

एक दिन यह शरीर भी जाएगा।

पर जो देख रहा है…

जो महसूस कर रहा है…

जो अभी इन शब्दों को पढ़ रहा है…

वह चेतना — वही आप हैं।

जब यह समझ थोड़ी भी भीतर उतरती है,

डर कम होने लगता है।

मृत्यु परिवर्तन बन जाती है।

हानि अनुभव बन जाती है।

दर्द शिक्षक बन जाता है।

सबसे बड़ा बंधन — आसक्ति

प्रेम बुरा नहीं है।

आसक्ति बंधन है।

आसक्ति कहती है:

“यह चला गया तो मैं खत्म।”

प्रेम कहता है:

“तुम हो, इसलिए कृतज्ञ हूँ।”

कृष्ण कहते हैं:

“कर्म करो — पर फल की चिंता मत करो।”

कल्पना कीजिए…

आप पूरी निष्ठा से काम करें

पर परिणाम से डरे नहीं।

आप प्रेम करें

पर खोने के भय में न जिएँ।

आप सेवा करें

पर प्रशंसा की प्रतीक्षा न करें।

यह कमजोरी नहीं —

यह आंतरिक शक्ति है।

असली युद्ध मन में है

आपका कुरुक्षेत्र बाहर नहीं है।

वह आपके भीतर है।

- जब क्रोध उठता है।
- जब तुलना जलाती है।
- जब आलस्य रोकता है।
- जब डर आगे बढ़ने से रोकता है।

मन या तो आपका मित्र है

या आपका सबसे बड़ा शत्रु।

अनियंत्रित मन जीवन को बिखेर देता है।

साधित मन जीवन को चमत्कार बना देता है।

गीता भागने को नहीं कहती।

गीता जागने को कहती है।

जब आप अकेले महसूस करते हैं

कभी ऐसा लगता है कि कोई समझता नहीं।

पर गीता कहती है:

आप कभी अकेले नहीं हैं।

जिस चेतना से आपका हृदय धड़क रहा है,

उसी से यह पूरा ब्रह्मांड धड़क रहा है।

जब कृष्ण ने विराट रूप दिखाया —

तो उसमें सृष्टि भी थी और संहार भी।

जन्म भी।

मृत्यु भी।

खुशी भी।

दुख भी।

सब एक ही लय का हिस्सा है।

आपका संघर्ष व्यर्थ नहीं है।

आपको गढ़ा जा रहा है।

जैसे आग में लोहा तपकर तलवार बनता है।

सफलता क्या है?

दुनिया कहती है — जीत।

गीता कहती है — समत्व।

सफलता तालियाँ नहीं है।

सफलता है —

रात को शांत सो पाना।

सफलता है —

अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करना।

जब आप अपना धर्म छोड़ते हैं,

अंदर खालीपन आता है।

जब आप अपने सत्य पर चलते हैं,

संघर्ष भी अर्थपूर्ण लगता है।

दुख दंड नहीं है

दुख आपको तोड़ने नहीं आता।

दुख आपको जगाने आता है।

हर धोखा भ्रम तोड़ता है।

हर असफलता अहंकार तोड़ती है।

हर हानि आसक्ति हटाती है।

धीरे-धीरे जीवन झूठ हटाता है

ताकि सत्य प्रकट हो सके।

और सत्य मुक्त करता है।

अंतिम संदेश

अंत में कृष्ण कहते हैं:

“सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।”

अर्थ?

डर छोड़ो।

अहंकार छोड़ो।

अत्यधिक नियंत्रण छोड़ो।

अपना श्रेष्ठ कर्म करो —

और विश्वास रखो।

विश्वास कि जीवन तुम्हारे विरुद्ध नहीं है।

विश्वास कि जो तुम्हारा है वह छिनेगा नहीं।

विश्वास कि जो गया, वह कभी तुम्हारा था ही नहीं।

समर्पण हार नहीं है।

समर्पण शांति है।

जीवन गीता के अनुसार क्या है?

जीवन है —

कर्तव्य निभाना

परिणाम छोड़ देना

प्रेम करना

पर बंधन नहीं बनाना

संघर्ष करना

पर घृणा नहीं पालना

और अंत में —

स्वयं को पहचान लेना।

यदि अभी आप टूटे हुए महसूस कर रहे हैं…

याद रखिए —

अर्जुन भी टूटे थे।

पर वही अर्जुन उठे…

समझे…

और परिवर्तित हो गए।

आपके भीतर भी एक कृष्ण है।

एक आवाज़ —

जो कह रही है:

“उठो।”

गुस्से से नहीं।

अहंकार से नहीं।

बल्कि जागरूकता से।

जीवन समस्या नहीं है।

जीवन अवसर है।

स्वयं को पहचानने का।

साहस से जीने का।

और अंततः —

शांति में विलीन हो जाने का।

<u>यही गीता का जादू है।</u>